थके हुए कलाकार से

- धर्मवीर भारती

सृजन की थकन भूल जा देवता !

अभी तो पड़ी है धरा अधबनी,
अभी तो पलक में नही खिल सकी,
नवल कल्पना की मृदुल चाँदनी।
अभी अधखिली ज्योत्स्ना की कली,
नहीं जिन्दगी की सुरभि में सनी!
अभी तो पड़ी है धरा अधबनी,
अधूरी धरा पर नहीं है कहीं,
अभी स्वर्ग की नींव का भी पता!
सृजन की थकन भूल जा देवता !
रुका तू , गया रुक जग का सृजन,
तिमिरमय नयन में डगर भूलकर,
कहीं खो गई रोशनी की किरन,
अलस बादलों में कहीं सो गया,
नई सृष्टि का सप्तरंगी सपन,
रुका तू, गया रुक जग का सृजन,
अधूरे सृजन से निराशा भला,
किसलिए जब अधूरी स्वयं पूर्णता ?
सृजन की थकन भूल जा देवता !
प्रलय से निराशा तुझे हो गई ?
सिसकती हुई साँस की जालियों में,
सबल प्राण की अर्चना खो गई,
थके बाहुओं में अधूरी प्रलय,
'औ' अधूरी सृजन-योजना खो गई,
थकन से निराशा तुझे हो गई ?
इसी ध्वंस में मूर्छित-सी कहीं
पड़ी हो नई जिन्दगी, क्या पता !
सृजन की थकन भूल जा देवता !

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. अधबनी–धरा पर अभी क्या–क्या बनना शेष है ?
2. स्वर्ग की नींव का पता किस प्रकार लग सकता है ?
3. कवि के अनुसार प्रलय से कलाकार को निराश क्यों नहीं होना चाहिए ?
4. 'थके हुए कलाकार से' कविता का केन्द्रीय–भाव स्पष्ट कीजिए।
5. कवि ने अधूरे सृजन से निराश न होने की बात कहकर क्या संकेत देना चाहा है ?

योग्यता विस्तार

1. धर्मवीर भारती की अन्य कविताएँ पुस्तकालय से खोजकर पढ़िए।
2. मध्यप्रदेश की लोक–कलाओं के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।
3. आपके गाँव/शहर में कौन–कौन सी कलाओं के कलाकार निवास करते हैं? सूचीबद्ध कीजिए।
4. मिट्टी का उपयोग कर क्या आप किसी कृति का सृजन कर सकते हैं, यदि हाँ, तो बन जाइए कलाकार।

शब्दार्थ

सृजन=निर्माण। **धरा**=पृथ्वी। **ज्योत्सना** = चाँदनी। **सुरभि** = सुगंध। **तिमिरमय** = अंधकार युक्त। **ध्वंस** = नाश। **डगर** = मार्ग।